"प्रवासी भारतीयों में राष्ट्रवाद का उदय: गदर पार्टी के विशेष सन्दर्भ में"

Anjli, Research Scholar, Department of History,
M.M. College, Modinagar, Ghaziabad, Uttar Pradesh.

Dr. Sunita Sirohi, Supervisor, Department of History,
M.M. College, Modinagar, Ghaziabad, Uttar Pradesh.

20 वीं शताब्दी की शुरुवात में, ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के तहत भारत से लाखों प्रवासी भारतीय, विशेष रूप से पंजाबी सिख, हिंदू और मुसलमान मजदूर, उत्तरी अमेरिका (अमेरिका और कनाडा) की और प्रवासित हुए। यह प्रवास आर्थिक अवसरों की खोज में था, वहाँ उन्हें गहन नस्लीय भेदभाव का सामना करना पड़ा। उदाहरणस्वरूप - कनाडा का 'कंटीन्युअस जर्नी रेगुलेशन' और अमेरिका का 'एशियाटिक एक्सक्लूजन एक्ट' ने भारतीयों को अनचाहें मेहमान बना दिया। जबकि 1914 ई० की कामागाटामारू घटना - जिसमें 376 भारतीय यात्रियों को कनाडा में प्रवेश न देकर वापस भेज दिया, परिणामस्वरूप सैंकडों यात्रियों की मौत हो गयी- ने इस असन्तोष को चरम पर पहुँचा दिया। इन घटनाओं ने प्रवासी भारतीयों में ब्रिटिश साम्राज्य के प्रति गहन विद्रोह की भावना को जन्म दिया, जो गदर पार्टी (Ghadar Party) के रूप में संगठित क्रांतिकारी आंदोलन में परिवर्तित हो गया।

गदर पार्टी की स्थापना 15 जुलाई 1913 ई० को सैन फ्रासिस्कों अमेरिका में लाला हरदयाल, सोहन सिंह भाकना, करतार सिंह सराभा और अन्य प्रवासी नेताओं द्वारा की गई। इसका नाम गदर (व्रिदोह या क्रांति) भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम की ललकार था। जो मुख्य रूप से पंजाबी प्रवासियों का गठबन्धन था लेकिन इसमें हिंदू, सिख, मुसलमान और ईसाई समुदाय की धर्मनिरपेक्ष एकजुटता पर जोर दिया गया। पार्टी का वैचारिक आधार अराजकतावाद, समाजवाद और राष्ट्रवाद का अनूठा मिश्रण था, जो ब्रिटिश शासन को लूट का राज बताते हुए सशस्त्र विद्रोह का आहान करता था। इसका प्रमुख प्रचार माध्यम (गदर) साप्ताहिक समाचार पत्र था। जो ऊर्दू, हिन्दी, पंजाबी और गुजराती व अंग्रेजी में प्रकाशित होता था।

इस पत्र में क्रांतिकारी कविताएँ ब्रिटिश नीतियों की तीखी आलोचना और स्वतंत्रता के प्रेरक नारे जैसे- इंकलाब जिंदाबाद और भारत माता की जय भरें होते थे। यह पत्र 10,000 से अधिक प्रतियों में छपता और अमेरिका, कनाडा, सिंगापुर, बर्मा, मिस्त्र, तुर्की तथा अफगानिस्तान तक विस्तारित होता जिससे वैश्विक स्तर पर भारतीय डायस्पोरा में राष्ट्रवादी चेतना का प्रसार हुआ।

इस शोध पत्र में गदर आंदोलन (1919-18 ई०) की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, संगठनात्मक संरचना, प्रमुख गतिविधियों- जैसे 1915 ई० का भारत लौटकर सशस्त्र विद्रोह प्रयास, जिसमें 6000 से अधिक गदरियों ने बैरकपुर, लाहौर और अन्य स्थानों पर हमले किए तथा ब्रिटिश दमन (12000 गिरफ्तारियों और 40 फासियों) का विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। प्रथम विश्व युद्ध के दौरान जर्मनी से प्राप्त सहायता ने आंदोलन को अंतरराष्ट्रीय आयाम दिया लेकिन ब्रिटिश खुफिया एजेंसी की कारवाही से यह कमजोर पड़ा।

कुल मिलाकर गदर पार्टी प्रवासी राष्ट्रवाद के उदय का प्रारम्भिक और ट्रांसनेशनल उदाहरण है। जो औपनिवेशिक संघर्ष को रेखांकित करता है। यह शोध पत्र दर्शाता है कि विदेशों में बसे भारतीयों की पीड़ा ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को नई दिशा दो और इसकी विरासत आज भी डायस्पोरा अध्ययनों में प्रासंगिक बनी हुई है।

की- वर्डस - गदर पार्टी, प्रवासी भारतीय, राष्ट्रवाद, क्रांतिकारी आंदोलन, कामागाटामारू, धर्मनिरपेक्ष राष्ट्रवाद, गदर समाचार पत्र।

ISSN2277-3630(online),Published by International journal of Social Sciences & Interdisciplinary Research., under Volume: 14 Issue:11 in Nov-2025 https://www.gejournal.net/index.php/IJSSIR

Copyright (c) 2025 Author (s). This is an open-access article distributed under the terms of Creative Commons Attribution License(CCBY).To view a copy of this license,

visithttps://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

प्रवासी भारतीयों का प्रवास :-

भारतीयों के प्रवास का इतिहास प्राचीन काल से चला आ रहा है, लेकिन आधुनिक सन्दर्भ में यह 19वीं शताब्दी के अंत और २० वीं शताब्दी की शुरुवात से जुड़ा है। यह प्रवास मुख्य रूप से ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन की आर्थिक नीतियों, गरीबी, सूखा और अवसरों की खोज से प्रेरित था। लाखों भारतीयों ने एशिया, अफ्रीका कैरिबियन, यूरोप और अमेरिका महाद्धीप की और रुख किया जो भारतीय समाज, संस्कृति और स्वतन्त्रता संग्राम को वैश्विक आयाम दे गया।

कनाडा और अमेरिका में सबसे पहले पहुँचने वाले भारतीय प्रवासी अधिकाशतः सिख थे। 1900 ई० के आस पास उनके प्रवास की शुरुवात हुई। उनके गाँवो में इससे पहले भी कई लोग हांगकांग, शंघाई, मलाया, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड और पूर्वी अफ्रीका के क्षेत्रों में चलें गए थे। काम की खोज के तलाश में भारतीय प्रवासी हो गए थे।

जिस समय भारतीय प्रवासियों ने विदेशों में प्रवास किया उसी समय कनाड़ा के ब्रिटिश कोलम्बिया प्रांत में ऊँची मजदूरी की सभावनाएँ पैदा हुई। कनाडा पैसिफिक रेल को बिछाने, जंगल को साफ करने और जमीन को उपजाऊ बनाने के लिए विशाल श्रमिक शक्ति की दरकार थी। पहले भी बड़ी संख्या में चीनी और जापानी श्रमिक वहाँ पहुँच चुके थे। 1908 ई० में पंजाब के लगभग 5000 भारतीय ब्रिटिश कोलंबिया प्रांत में रह रहे थे। जब उसी वर्ष भारतीयों के और अधिक आगमन पर वहाँ रोक लगा दी गई तो वह सयुक्त राज्य अमेरिका में तब तक पहुँचते रहे जब तक छह वर्ष बाद वहा भी उनका प्रवेश वर्जित नहीं हो गया। 1910 ई० तक कनाड़ा और अमेरिका के प्रशांत तटीय क्षेत्रों में प्रवासी भारतीय श्रमिकों की संख्या 10,000 से अधिक हो गई थी।

उस समय इन पजाबियों की एक बड़ी संख्या पूर्व के हांगकांग और शंघाई जैसे बंदरगाहों में अपना समय गुजार रही थी और उत्सुकतापूर्वक कनाडा और संयुक्त राज्य अमेरिका पहुँचने के अवसरों का इंतजार कर रही थी। अमेरिकी सरकार की एक रिपोर्ट के अनुसार 1914 ई० में लगभग 6 हजार हिंइंस्तानी मनीला में थे और संयुक्त राज्य अमेरिका में प्रवेश की प्रतीक्षा कर रहें थे। यह असामान्य स्थिति थी कि भू स्वामी किसान परिवार के नौजवान इतनी बड़ी संख्या में अज्ञात अजनबी देशों देशों में श्रमिक के रूप में रोजगार पाने के लिए इकठ्ठा हुए हो।[1]

प्रारंभिक प्रवासियों का विवरण बताता है कि घर के आर्थिक अभाव ही उनके प्रवास का प्रधान कारण था, न कि कोई आकर्षक तत्व। ऐसा भी नही था कि प्रवासी निर्धनतम कृषक परिवार से ही आते हो। किंतु खेती के लिए काफी पैसो की जरूरत होती थी। 1904 ई० में सैन फ्रासिस्कों गये हुए भाग सिह कैनेडियन ने बाद में अपनी डायरी में लिखा था कि उनके पिता के पास 42 एकड़ जमीन थी। लेकिन इससे मिलने वाली आमदनी इतनी भी नही थी कि उससे परिवार की जरूरते पूरी हो सके। इसलिए उन्होंने सात रू मासिक वेतन वाली फौज की नौकरी छोड़कर एक मजदूर के रूप में अमेरिका जाने को चुना। जिन किसानों के पास कम जमीन थी उनके लिए परिस्थितियाँ और भी अधिक कठिन थी।

अत: अब अपेक्षाकृत ठीक-ठाक परिवारों के नौजवानों ने रोजगार की तलाश में विदेशी भूमि के लिए विस्थापन शुरू किया, तो प्रशासन ने चैन की साँस ली क्योंकि इससे जमीन पर दबाव में कमी आई और ग्रामी अंशांति की सभावनाएँ घटी। इन परिस्थितियों में प्रात के ग्रामीन युवको के लिए प्रवास एक आकर्षक विकल्प के रूप में सामने आया।[2]

प्रवास के ऐतिहासिक चरण (phases of migration)

भारतीय प्रवास को मुख्य रूप से तीन चरणों में विभाजित किया जा सकता है:-

प्रथम चरण:- बंधुआ मजदूरी (Indentured Labour 1834 ई०-1917 ई०)-

ISSN2277-3630(online),Published by International journal of Social Sciences & Interdisciplinary Research., under Volume: 14 Issue:11 in Nov-2025 https://www.gejournal.net/index.php/IJSSIR

Copyright (c) 2025 Author (s). This is an open-access article distributed under the terms of Creative Commons Attribution License(CCBY).To view a copy of this license,

visithttps://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

ब्रिटिश साम्राज्य ने गुलामी उन्मूलन (1833 ई०) के बाद सस्ते श्रम की आवश्कता महसूस की। भारतीयों को बंधुआ मजदूर (Indentured Labour) के रूप में अफ्रीका (मारीशस, दक्षिण अफ्रीका, पूर्वी अफ्रीका) कैरिबियन (त्रिनिदाद, गुयाना, फिजी) और ओशिनिया भेजा गया। संख्या - लगभग 1.5 करोड़ मुख्यत: उत्तर भारत के बाह्मण, राजपूत, तमिल और तेलुगू) 1838 ई० से 1920 ई० तक प्रवासित हुए।

कारण- भारत में बेरोज़गारी व भू राजस्व दबाव और ब्रिटिश चाय, कॉफी बागानो की माँग। अनुबंध 5-10 वर्ष का होता था, लेकिन शोषण कम वेतन के कारण नई गुलामी कहा गया। उदाहरण- महात्माँ 'गाँधी का दक्षिण अफ्रीका प्रवास 1893 ई० इसी चरण का था , जहाँ उन्होंने नस्लीय भेदभाव का सामना किया।

प्रभाव: इन प्रवासियों ने स्थानीय संस्कृति को प्रभावित किया जैसे फिजी में भारतीय समुदाय।[3]

द्वितीय चरण:- स्वतंत्र प्रवास (free Migration 1900 ई०-1940 ई०)

यह गदर पार्टी का मुख्य सन्दर्भ है। ब्रिटिश भारत से स्वतंत्र रूप से मजदूरी व्यापार शिक्षा के लिए प्रवास। उत्तरी अमेरिका, ब्रिटेन व आस्ट्रेलिया। संख्या-1900 ई०- 1920 ई० के बीच लगभग 10,000 - 15,000 पंजाबी सिख हिन्दू और मुसलमान अमेरिका पहुँचे। कनाडा में 1908 ई० तक 5000 से अधिक और अमेरिका में 6000।

कारण- पंजाब में ब्रिटिश भूमि सुधारों से किसानो की बदहाली, सूखा (1899 ई०-1900 ई०) और सोने की चमक (कैलिफोनिया गोल्ड रश का प्रभाव) रेलवे और लकड़ी उद्योगों ने आकर्षित किया। जहाजों से बैकूवर या सैन फ्रांसिस्को पहुँचते।

समुदाय:- मुख्यत : युवा वर्ग सिख गुरुद्वारों के माध्यम से संगठित महिलाओं की संख्या कम थी।

चुनौतियाँ:- नस्लीय कानून जैसे कनाडा का कंटीन्यूअस जर्नी रेगुलेशन 1908 ई० जिससे भारतीयों को एशिया में सीधी यात्रा अनिवार्य की। महँगी टिकटों से प्रवेश रोका। अमेरिका में जैटलमेंट एग्रीमेंट (1907 ई०) ने जापानी चीनी के बाद भारतीयों को लक्ष्य बनाया। उदाहरण- 1907 ई० का बैकूवर दंगा कनाडाई श्रमिकों ने भारतीयों पर हमला किया।[4]

तृतीय चरण:- उत्तरी अमेरिका में प्रवास:-

गदर पार्टी के उदय का आधार पंजाबी प्रवासियों का उत्तर अमेरिका जाना था।

प्रवास मार्ग और प्रक्रिया:- पंजाब के जालंधर, होशियारपुर और लुधियाना से जहाज (कामागाटामारू) से हांगकांग जापान होते हुए बैकूवर या सैन फ्रैंसिस्को यात्रा 3-4 सप्ताह , किराया 50-100 रुपये ब्रिटिश एजेटो ने प्रचार किया कि अमेरिका में सोना बरसेगा | काम - कनाडा में लकड़ी काटना (ब्रिटिश कोलबियां) रेलवे निर्माण अमेरिका में फसल कटाई

समुदाय निर्माण:- गुरुद्वारों की स्थापना जैसे स्कॉक्ट गुरुद्वारा (1912 ई० कैलिफोनिया) सांस्कृतिक क्रेद बने खालसा दीवान सोसाइटी 1911 ई० ने राजनीतिक जागृति शुरू की। महिलाओं को पिक एंड शवेल से जोड़ा गया।

प्रवास के सामाजिक आर्थिक प्रभाव (Socio-economics Impact):- सकारात्मक - धन भेजकर भारत में भूमि खरीदी शिक्षा कई अमेरिकी विश्वविद्यालयो में छात्र, संस्कृति का प्रसार-भागड़ा, पंजाबी खाना। नकारात्मक -परिवार विखंडन, शोषण, पहचान संकट गदर ने इसको राष्ट्रवाद में बदला।[5]

ISSN2277-3630(online),Published by International journal of Social Sciences & Interdisciplinary Research., under Volume: 14 Issue:11 in Nov-2025 https://www.gejournal.net/index.php/IJSSIR

Copyright (c) 2025 Author (s). This is an open-access article distributed under the terms of Creative Commons Attribution License(CCBY).To view a copy of this license,

visithttps://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

गदर आंदोलन का ऐतिहासिक संदर्भ:-

गदर आंदोलन (Ghadar Movement) भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का एक क्रांतिकारी और अंतर्राष्ट्रीय अध्याय था, जो २० वी शताब्दी की शुरुवात में विदेशी धरती पर बसे भारतीय प्रवासियों द्वारा संचालित हुआ । यह आंदोलन ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन को उखाड़ फेकने का प्रयास था, जो न केवल राजनीतिक स्वतंत्रता की मांग करता था, बल्कि प्रवासी भारतीयों के नस्लीय भेदभाव और आर्थिक शोषण के खिलाफ भी संघर्ष करता था । गदर शब्द ऊर्दू में विद्रोह या क्राति का प्रतीक है, जो आदोलन की उग्र और सशक्त प्रकृति को दर्शाता है। यह आंदोलन मुख्य रूप से पंजाबी प्रवासियों पर आधारित था लेकिन इसमें हिंद, मुसलमान, बंगाली, बुद्धिजीवी और अन्य समुदायों की भागीदारी ने इसे धर्मनिरपेक्ष रूप दिया ।

वैचारिक आधार (Ideology)

गदर पार्टी का मूल सिद्धान्त भारतीय स्वतन्त्रता और राष्ट्रवाद था 'जो रंगों (लाल, केसरिया एवं हरा) से प्रतिकित था । स्वतन्त्रता, भाईचारा और समानता । यह अराजकतावाद, समाजवाद, कम्युनिज्म और श्रमिक संघो से प्रेरित था । पार्टी ने ब्रिटिश राज को लूट का राज कहा और सशस्त्र विद्रोह का आहान किया । यह गाँधीवादी अहिंसा के विपरित था और धर्मनिरपेक्षता पर जोर दिया । हिंदू, सिख, मुसलमान सभी एक । प्रथम विश्व युद्ध के बाद यह पार्टी कम्युनिस्ट और समाजवादी गुटो में बंट गयी ।[6]

गदर पार्टी की स्थापना से पहले अमेरिका और कनाडा में इसी समय विभिन्न शहरों के समान उद्देश्य को लेकर अनेक संगठन क्रियाशील थे । हरदयाल एवं अन्य नेताओं ने समान उद्देश्य के लिए कार्यरत विभिन्न संगठनों के बीच सहयोग एवं सम्पर्क की आवश्कता अनुभव की । 1912 ई० के अन्त में हुई भारतीयों की एक बैठक में यह निश्चय हुआ की द् हिन्दू एसोसिएशन ऑफ द् पैसिफिक कोस्ट नामक एक संगठन प्रारम्भ किया जायें (उस समय अमेरिका और कनाडा में सभी भारतीयों को हिन्दू कहा जाता था) ।

लाला हरदयाल ने स्टेनफोर्ड विश्वविद्यालय के संस्कृत और दर्शन के प्रवक्ता पद से त्याग पत्र देकर, संयुक्त राज्य अमेरिका में रहने वाले भारतीयों में क्रांतिकारी गतिविधियों का संगठन करने में अपना पूरा समय लगाया ।[7] नये बने संगठन में सोहन सिंह भाकना अध्यक्ष और लाला हरदयाल सचिव चुने गए । अन्य लोग जो संस्था से जुड़े थे उनमें- रामचन्द्र पेशावरी, गोविन्द बिहारी, ज्वाला सिंह आदि प्रमुख थे ।

हिन्दुस्तानी एसोसिएसन (एस्टोरिया) के प्रमुख सदस्य भगवान सिंह, मुंशी राम, काशी राम, संतोष सिंह, केशर सिंह, करीम नक्श, नबाव खान, बलवत् सिंह आदि जल्दी ही नयी संस्था में सम्मिलित हो गए । लाला हरदयाल, सोहन सिंह भाकना एवं पण्डित काशी राम की एक गुप्त समिति बनाई गई ।[8] इस संस्था का मुख्य कार्य ब्रिटिश विरोधी प्रचार करना था । जनवरी 1913 ई० से अगस्त 1914 ई० तक लाला हरदयाल एवं उनके सहयोगियों ने सेंट जान, लिटन, पोर्टलेण्ड, एस्टोरिया, सेकेमेंटो, वुडलैंड, बर्कले आदि स्थानों पर अनेक बैठकें और सभाएँ आयोजित कर ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध विद्रोह की अग्नि प्रज्वलित की ।

संगठन की एक बैठक में सम्भवतः मार्च 1913 ई० में गदर नामक एक पत्र सान फ्रांसिस्को से निकालने का निश्चय किया ।[9] नवंबर 1913 ई० में गदर का पहला अंक प्रकाशित किया गया । प्रथम अंक के सम्पादकीय से गदर पार्टी के उद्देश्य पर प्रकाश पड़ता है । उनकी कुछ पक्तियाँ इस प्रकार थी :-

हमारा नाम क्या हैं? गदर
हमारा काम क्या है? गदर
गदर कहाँ होगा ? भारत में
कब होगा ? कुछ ही वर्षों में, क्यों..... ?

ISSN2277-3630(online),Published by International journal of Social Sciences & Interdisciplinary Research., under Volume: 14 Issue:11 in Nov-2025 https://www.gejournal.net/index.php/IJSSIR
Copyright (c) 2025 Author (s). This is an open-access article distributed under the terms of Creative Commons Attribution License(CCBY).To view a copy of this license,

visithttps://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

क्योंकि अब लोग ब्रिटिश राज में किए जाने वाले दमन एवं अत्याचार को सहन नही कर सकते। आज पहली नवंबर 1913 ई० को भारत के इतिहास में एक नया युग आरम्भ हो रहा है क्योंकिं आज विदेशों में, किन्तु अपने देश की भाषा में अंग्रेजी राज के विरुद्ध युद्ध हो रहा है। [10]

गदर पार्टी की स्थापना 1913 ई० में संयुक्त राज्य अमेरिका के पश्चिमी तट पर हुई, जब प्रवासी भारतीयों में ब्रिटिश शासन के प्रति असतोषं चरम पर था। औपचारिक रूप से इसका गठन 15 जुलाई 1913 ई० को ओरेगन के एस्टोरिया (Astoria) में फिनिश सोशलिस्ट हॉल में एक बैठक में हुआ। यह पैसिफिक कोस्ट हिंदी एसोसिएशन (Pacific coast Hindustani Association) से विकसित हुआ, जो 1911-12 ई० में कनाडा के बेकूवर से शुरू हुआ था। पार्टी का मुख्यालय सैन - फ्रासिकों के 5 वुडरों स्ट्रीट पर युगान्तर (Yugantar Ashram) में था।

युगान्तर शब्द बंगाल के प्रसिद्ध क्रांतिकारी पत्र युगान्तर से लिया गया था। युगान्तर आश्रम से ही आगे की गतिविधियाँ संचालित की गयी। इस कार्य में लाला हरदयाल का सहयोग करने वालों में रामचन्द्र, गोधा राम, मुंशी राम, पृथ्वी सिंह आदि प्रमुख थे। गदर पार्टी के सदस्य आश्रम में रहते थे। गदर का गुरुमुखी संस्करण जनवरी 1914 ई० में निकाला गया। गदर पत्र के माध्यम से सान-फ्रासिस्कों में रहने वाले हजारों सिख (जो वहाँ मेहनत मजूरी करते थे) अमरीकी अप्रवासन कानून के कारण असन्तुष्ठ थे। इनमें क्रांतिकारी सिद्धान्तों के प्रचार में गदर पार्टी ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।[11]

गदर पत्र के सम्बन्ध में सेडिशन कमेटी की राय थी कि हिंसा में विश्वास रखने वाला यह पत्र ब्रिटिश विरोधी था। इसका प्रत्येक वाक्य हत्या और विद्रोह का प्रचार करता और लोगों की भावनाओं को भडकाता। भारतीयों को यह प्रेरित करता कि वे भारत इस उद्देश्य से जायें कि वहाँ विद्रोह करना है, अंग्रेजों की हत्या करनी है, और कैसे भी ब्रिटिश सरकार को निकालकर बाहर करना है। यह प्रत्येक राजद्रोही और हत्यारे की प्रशंसा करता ताकि लोग उसका अनुसरण करें।[12]

गदर पार्टी की बढ़ती सक्रियता को देखते हुए 16 मार्च 1914 ई० को लाला हरदयाल को गिरफ्तार कर लिया गया। उसी दिन उन्हें जमानत पर छोडा गया। इसके पश्चात लाला हरदयाल ने अमेरिका में रहना उचित नही समझा। वे अप्रैल 1914 ई० में स्विट्जरलैंड चले गये और बाद में जर्मनी पहुँच कर बर्लिन कमिटी के कार्यों में सहयोग दिया। हरदयाल की अनुपस्थिति में रामचन्द्र एवं अन्य लोगों ने उनके कार्यों को जारी रखा। भारत में गदर की तैयारी के लिए धन एवं आग्नेयास्त्रों के लिए अमेरिका और अन्य देशों में अनुरोध किया गया। प्रथम विश्व युद्ध की घोषणा के साथ ही जर्मन एजेन्ट से हथियार प्राप्त किये।

इसी बीच कनाडा के अधिकारियों द्वारा कामागाटामारू जहाज के यात्रियों को कनाड़ा की भूमि पर उतरने न देने के कारण भी कनाडा और अमेरिका के यात्रियों में रोष उत्पन्न हुआ। गदर पार्टी ने ऐसे अवसरों पर बैठकें आयोजित कर ब्रिटिश सरकार विरोधी उग्र प्रचार किया। प्रथम विश्व युद्ध के प्रारम्भ होते ही गदर पार्टी ने अमेरिका में बसे भारतीयों को विद्रोह में भाग लेने के लिए प्रेरित किया। अगस्त के आरम्भ में केलिफोनिया में सभाएँ आयोजित हुई। इनमें 2000 डॉलर भी इकट्ठा किए गए। सभाओं में गदर पार्टी के प्रमुख नेताओं - रामचन्द्र, मोहम्मद बरकतुल्ला, भगवान सिह, अमर सिह आदि ने भाषण दिए।[13]

ISSN2277-3630(online),Published by International journal of Social Sciences & Interdisciplinary Research., under Volume: 14 Issue:11 in Nov-2025 https://www.gejournal.net/index.php/IJSSIR

Copyright (c) 2025 Author (s). This is an open-access article distributed under the terms of Creative Commons Attribution License(CCBY).To view a copy of this license,

visithttps://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

कामागाटामारू की घटना 1914 ई०

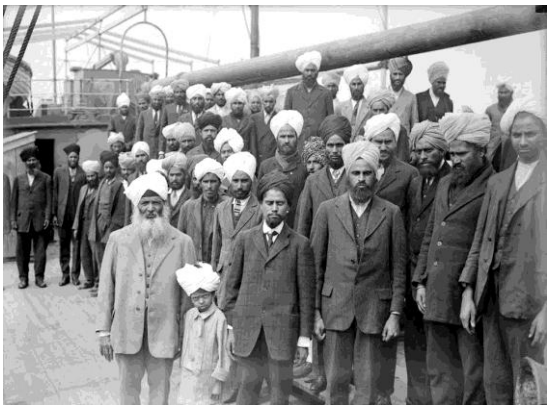

1914 ई० की कामागाटामारू जहाज पर सवार 376 भारतीयों की मौत ने अमेरिका की धरती से भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम को एक नई दिशा दी ? यह घटना मात्र एक नस्लीय अन्याय नही थी, बल्कि प्रवासी भारतीयों में राष्ट्रवाद के वैश्वक उदय का प्रतीक बनी। बैकुंवर (कनाडा) से आने वाले इस जहाज को भारत सरकार ने गदर नेताओं द्वारा विदेश से प्रवासी भारतीयों को भारत भेजने के आन्दोलन के सन्दर्भ में देखा और यात्रियों के साथ जो अमानवीय व्यवहार किया गया उससे ब्रिटिश विरोधी भावना में वृद्धि हुई। हागकांग में उस समय 150 सिख थे। जो कनाडा जाना चाहते थे। लेकिन कनाड़ा के कानून के अनुसार उनको वहाँ जाने में कठिनाई थी। इस कठिनाई को दूर करने के लिए बाबा 'गुरुद्धत सिंह' ने एक जहाज किरायें पर लेकर कलकत्ता होते हुए बैकूवर जाने की योजना बनाई। उन्होंने मार्च 1914 ई० में हांगकांग के एक जर्मन शिपिंग एजेण्ट मि० बुने के माध्यम से एक जापानी जहाज कामागाटामारू किराये पर लिया।

4 अप्रैल 1914 ई० को कामागाटामारू हांगकांग से चला 23 मई को 341 सिख और पंजाबी मुसलमानों को लेकर यह जहाज बैकूवर पहुँचा।[14] कहा जाता है कि मार्ग में शंघाई मोजी और याकोहामा बन्दरगाहों पर गदर की प्रतियां जहाज पर लाई गई थी और याकोहामा में गदर पार्टी के नेता भागवान सिंह और बरकतुल्ला भी जहाज पर आए। भगवान सिंह नें उत्तेजक भाषण देकर ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध विद्रोह करने की सलाह दी।[15] 23 मई को बैकूवर पहुँचने पर जहाज के यात्रियों को कनाडा के अधिकारियों ने उतरने नही दिया। यात्रियों और अधिकारियों के बीच विवाद के बाद यात्री पर्याप्त खाद्य सामग्री के साथ वापस लौटने को तैयार हुए व 23 जुलाई को जहाज बैकूवर से चल दिया।

जहाज के लौटते समय ही विश्व युद्ध प्रारम्भ हुआ।[16] यह जहाज याकाहोमा, कोवे होते हुए सितम्बर को हुगली पहुँचा, वहाँ से यात्रियों को विशेष ट्रेन के द्वारा सीधे पंजाब भेजा गया। सिखों ने ट्रेन में सवार होने से इनकार कर दिया और वे पैदल ही कलकत्ता की ओर बढ़ने लगे। पुलिस द्वारा उन्हें स्टेशन लौटाया गया। स्टेशन पर पुलिस और यात्रियों के बीच विवाद ने उपद्रव का रूप ले लिया। परिणाम स्वरूप 18 सिख उपद्रव में मारे गये, बाबा गुरुदत्त सिंह 28 अन्य लोगो के साथ भाग निकले, 202 यात्रियों को जेल भेज दिया गया।[17] बंदी यात्रियों में से अधिकांश को जनवरी 1915 ई० में छोड़ दिया गया लेकिन 31 लोगों को जेल में नजरबन्द कर दिया गया।[18]

निष्कर्ष:-

गदर आदोलन जो 1913 ई० में सैन फ्रांसिस्को की धरती से शुरू हुआ, भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम का एक ऐसा अध्याय है जो विदेशी धरती पर बसे प्रवासी भारतीयों की पीड़ा, संघर्ष और आशा को प्रतिबिंबित करता है। इस शोध पत्र के माध्यम से हमने देखा है कि कैसे २० शताब्दी की शुरुवात में ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन की कठोर नीतियों - जैसे पंजाब में सूखा, भूमि राजस्व दबाव और उत्तरी अमेरिका मे नस्लीय भेदभाव ने लाखों पंजाबी सिख, हिन्द और मुसलमान प्रवासियों को मात्र आर्थिक मजदूरी में परिवर्तित कर राष्ट्रवादी योद्धा में बदल दिया। गदर पार्टी लाला हरदयाल, सोहन सिंह भकना और करतार सिंह सराभा जेसे नेताओं द्वारा स्थापित ने गदर समाचार पत्र के माध्यम से क्रातिकारी विचारों का प्रसार किया, कामागाटामारू घटना 1914 ई० से प्रेरणा ली, और 1915 ई० के सशस्त्र विद्रोह के प्रयासों से ब्रिटिश शासन को चुनौती थी। हालांकि ब्रिटिश दमन 12000 हजार गिरफ्तारियाँ, 40 फासियों और सैकड़ों निर्वासन से आंदोलन शारीरिक रूप से कुचल दिया गया, लेकिन इसकी वैचारिक चिंगारी कभी बुझी नही।

इस विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि गदर ने प्रवासी भारतीयों में राष्ट्रवाद के उदय को न केवल जाग्रत किया, बल्कि इसे ट्राशनेशनल आयाम प्रदान किया। पार्टी का धर्मनिरपेक्ष आधार - हिंदू, सिख, मुसलमान सभी एक का नारा ने समुदायों के बीच एकता का प्रतीक स्थापित

ISSN2277-3630(online),Published by International journal of Social Sciences & Interdisciplinary Research., under Volume: 14 Issue:11 in Nov-2025 https://www.gejournal.net/index.php/IJSSIR
Copyright (c) 2025 Author (s). This is an open-access article distributed under the terms of Creative Commons Attribution License(CCBY).To view a copy of this license,

visithttps://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

किया, जो अराजकतावाद, समाजवाद और राष्ट्रवाद के मिश्रण से प्रेरित था। गदर को पारंपरिक भारत-केंद्रित राष्ट्रवाद से अलग, डायस्पोरा क्रातिकारी मॉडल के रूप में देखा जाना चाहिए, जो बाद के आंदोलनों जैसे - हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन (HSRA, भगतसिंह प्रभावित) इंडियन नेशनल आर्मी (INA) को वैचारिक प्रेरणा दे गया। इसके अतिरिक्त गदर ने प्रवासी भारतीयों को अपनी पहचान को भारत माता से जोडने का माध्यम दिया, जो आज के वैश्विक डायस्पोरा मे राष्ट्रवाद की जड़ें दर्शाता है।

संक्षेप में, गदर पार्टी प्रवासी भारतीय में राष्ट्रवाद के उदय का प्रतीक मात्र नही, बल्कि औपनिवेशिक दमन के खिलाफ वैश्विक प्रतिरोध का जीवंत दस्तावेज है। यह आदोलन सिखाता है कि स्वतंत्रता की लड़ाई सीमाओं से परे होती है। यह उन हृदयों में बसती है जो मातृभूमि से दूर भी इंकलाब जिंदाबाद का नारा लगाते है। गदर की विरासत आज भी प्रासंगिक है। जो हमें याद दिलाती है कि एकजुटता और साहस से कोई भी साम्राज्य उखांड फेंका जा सकता है। 2023 ई० में स्थापित गदर स्मारक (चत्री कला पंजाब) उसकी अमरता का प्रमाण है। अंत में जैसा कि गदर अखबार की एक कविता में कहा गया हैं कि - "तुम्हारे खून से सीचेंगे आजादी की मिट्टी" यह संकल्प आज भी जीवित है।

सन्दर्भ सूची :-

1. गदर आंदोलन- हरीश के० पुरी, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास भारत, पेज न० 1,2।
2. गदर आंदोलन का इतिहास- भैरव लाल दास, वाणी प्रकाशन- 2021, पेज न०
3. गदर आंदोलन का इतिहास- जगजीत सिंह, 1998, पेज नं० 36।
4. गदर लहर का इतिहास- डॉ० मालती मलिक हरबंस सिंह, 2007, पेज न० 75।
5. प्रवासी भारतीय हिंदी साहित्य- डॉ० विमलेश क्रांति वर्मा, वाणी प्रकाशन- 2023।
6. Foreign Department File No-21/1917, पेज न०-10,11।
7. Home Political File No- 299/1914,
8. Home Political File -A,1913, Page No-62-66।
9. Home Political File- 1915,Page No-91।
10. लाला हरदयाल पेपर, पेज नं० 215-16, राष्ट्रीय अभिलेखागार, नई दिल्ली।
11. गदर पार्टी का इतिहास, प्रीतम सिंह पट्टी और बनारसी दास चतुर्वेदी, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास भारत, पेज न०- 221।
12. सेडीशन कमेटी रिपोर्ट, पेज न० 146, राष्ट्रीय अभिलेखागार, नई दिल्ली।
13. पॉलिटिकल ट्रबुल इन इंडिया, पेज न०215, राष्ट्रीय अभिलेखागार, नई दिल्ली।
14. कामागाटामारू की समुद्री यात्रा, रामशरण विद्यार्थी, पेज न० 3।
15. पॉलिटिकल ट्रबुल इन इंडिया, पेज न० 240, राष्ट्रीय अभिलेखागार,नई दिल्ली।
16. सेडिशन कमेटी रिपोर्ट, पेज न० 148, राष्ट्रीय अभिलेखागार, नई दिल्ली।
17. होम पॉलिटिकल फाइल बी०, पेज न० 582- 585, सितंबर-1914, राष्ट्रीय अभिलेखागार,नई दिल्ली।
18. होम पॉलिटिकल फाइल डी० फाइल न० 44, जनवरी-1915, पेज न० 11,राष्ट्रीय अभिलेखागार, नई दिल्ली।

ISSN2277-3630(online),Published by International journal of Social Sciences & Interdisciplinary Research., under Volume: 14 Issue:11 in Nov-2025 https://www.gejournal.net/index.php/IJSSIR

Copyright (c) 2025 Author (s). This is an open-access article distributed under the terms of Creative Commons Attribution License(CCBY).To view a copy of this license,

visithttps://creativecommons.org/licenses/by/4.0/